भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महात्मा गांधीजी का योगदान

शमशेर सिंह, चरखी दादरी,
Email –sam131180.ss@gmail.com

सारांश

राष्ट्रीय आंदोलन में महात्मा गांधी का योगदान अतुलनीय है। उन्होंने अपने जीवन में सत्य, अहिंसा और सच्चाई के रास्ते पर चलकर एक ऐसा आंदोलन खड़ा कर दिया। जिसके आगे अंग्रेज भाग खड़े हुए। आज उन्हीं के प्रयासों से ही हम स्वतंत्र जीवन जी रहे हैं।

परिचय

महात्मा गांधी ने अपना संपूर्ण जीवन भारत एवं भारतवासियों के लिए न्यौछावर कर दिया। उनकी भूमिका अत्यंत सशक्त एवं महत्वपूर्ण रही। गांधी को हर विचारधारा व हर वर्ग की आलोचना मिलने के बावजूद उन्होंने जन नायक बनकर राष्ट्रीय आंदोलन को जन-जन तक पहुंचाया और महात्मा बनकर उभरे।

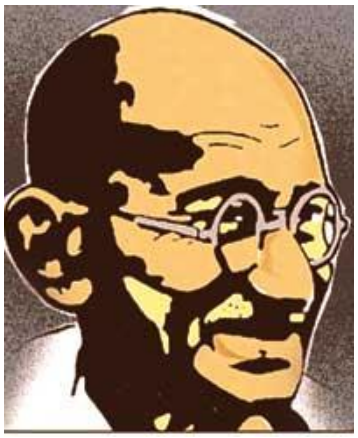

दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद भारतवासियों को उनके अधिकार दिलाने के लिए गांधी जी ने पहली बार सत्याग्रह के शस्त्र का प्रयोग किया और विजय भी पाई। इस प्रकार सन् 1914-15 में गांधी जब दक्षिण अफ्रीका से वापिस भारत लौटे, तब तक इन विचारों और जीवन-व्यवहारों में आमूल-चूल परिवर्तन आ चुका था।

भारत लौटकर कुछ दिन गांधी जी देश का भ्रमण कर वास्तविक स्थिति का जायजा लेते रहे। फिर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस जैसी संस्था को पूर्ण स्वतंत्रता का लक्ष्य देकर संघर्ष में कूद पड़े। क्योंकि प्रथम विश्वयुद्ध... में वचन देकर भी

अंग्रेज सरकार ने भारतीयों के प्रति अपने रवैये में कोई परिवर्तन नहीं किया था, इससे गांधी जी और भी चिढ़ गए और अंग्रेजी कानूनों का बहिष्कार और सत्याग्रह का बिगुल बजा दिया।

भारतवासियों के मानवाधिकारों का हनन करने वाले रोलट एक्ट का स्थान-स्थान पर विरोध-बहिष्कार होने लगा। सन् 1919 में जलियां-वाला बाग में हो रही विरोध-सभा पर हुए अत्याचार ने गांधी जी की अंतरात्मा को हिलाकर रख दिया। सो अब ये समूचे स्वतंत्रता आंदोलन की बागडोर सम्हाल खुलम-खुल्ला संघर्ष में कूद पड़े।

इनका संकेत पाते ही सारे देश में विरोधी आंदोलनों की एक आंधी सी छा गई। अंग्रेज सरकार की लाठी-गोलियां भी अंधाधुंध बरसने लगीं। जेलें सत्याग्रहियों से भर उठीं। गांधीजी को भी जेल में डाल दिया गया।

बिहार की नील सत्याग्रह, डाण्डी यात्रा या नमक सत्याग्रह, खेड़ा का किसान सत्याग्रह आदि गांधी जी के जीवन के प्रमुख सत्याग्रह हैं। इन्हें कई बार महीने-महीने भर का उपवास भी करना पड़ा। अपने विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए इन्होंने नवजीवन और यंग इण्डिया जैसे पत्र भी प्रकाशित किए।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में निर्णायक भूमिका निभाने वाले भारत छोड़ो आंदोलन ने अंग्रेजी हुकूमत की नींव हिलाने का काम किया था। यह वह आंदोलन था जिसमें पूरे देश की व्यापक भागीदारी रही थी। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की मशहूर घटना काकोरी कांड के ठीक सत्रह साल बाद 9 अगस्त सन् 1942 को महात्मा गांधी के आह्वान पर समूचे देश में एक साथ शुरू हुए आंदोलन ने देखते ही देखते ऐसा स्वरूप हासिल कर लिया कि अंग्रेजी सत्ता के दमन के सभी उपाय नाकाफी साबित होने लगे थे।

क्रिप्स मिशन की विफलता के बाद गांधीजी ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ अपना तीसरा बड़ा आंदोलन छेड़ने का फैसला लिया था। 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' के नारे के साथ शुरू हुए आंदोलन के थोड़े ही समय बाद गांधीजी को गिरफ्तार कर लिया गया था, लेकिन देश भर के युवा कार्यकर्ताओं ने हड़तालों और तोड़फोड़ की कार्रवाइयों के जरिए आंदोलन को जिंदा रखा।

कांग्रेस में जयप्रकाश नारायण जैसे समाजवादी सदस्य भूमिगत गतिविधियों में सबसे ज्यादा सक्रिय रहे। पश्चिम में सतारा और पूर्व में मेदिनीपुर जैसे कई जिलों में स्वतंत्र सरकार, प्रतिसरकार की स्थापना हो गई थी। अंग्रेजों को इस आंदोलन पर काबू पाने में एक वर्ष से भी ज्यादा समय लग गया था।

दूसरे विश्व युद्ध में बुरी तरह घिरे इंग्लैंड की हालत को देख नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने आजाद हिंद फौज को 'दिल्ली चलो' का नारा दिया। गांधी जी ने मौके की नजाकत को भांपते हुए 8 अगस्त 1942 की रात में ही बंबई (अब मुंबई) से 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' व भारतीयों को 'करो या मरो' का नारा दिया और सरकारी सुरक्षा में पुणे स्थित आगा खान पैलेस में चले गए।

9 अगस्त 1942 के दिन इस आंदोलन को गांधीजी ने प्रचंड रूप दे दिया। 9 अगस्त, 1942 को गांधीजी गिरफ्तार हो गए।

9 अगस्त ही क्यों

9 अगस्त 1925 को ब्रिटिश सरकार का तख्ता पलटने के उद्देश्य से क्रांतिकारी बिस्मिल के नेतृत्व में हिंदुस्तान प्रजातंत्र संघ के दस जुझारू कार्यकताओं ने काकोरी कांड को अंजाम दिया था। इसकी यादगार ताजा रखने के लिए पूरे देश में प्रतिवर्ष 9 अगस्त को 'काकोरी कांड स्मृति-दिवस' मनाने की परंपरा शहीद भगत सिंह ने शुरू कर दी थी

और इस दिन बहुत बड़ी संख्या में नौजवान एकत्र होते थे। गांधी जी ने एक सोची-समझी रणनीति के तहत 9 अगस्त 1942 का दिन चुना था।

9 अगस्त 1942 को दिन निकलने से पहले ही कांग्रेस वकिर्ंग कमेटी के सभी सदस्य गिरफ्तार हो चुके थे और कांग्रेस को गैरकानूनी संस्था घोषित कर दिया गया था। गांधी जी के साथ भारत कोकिला सरोजिनी नायडू को यरवदा पुणे के आगा खान पैलेस में, डा. राजेंद्र प्रसाद को पटना जेल व अन्य सभी सदस्यों को अहमदनगर के किले में नजरबंद किया गया था। सरकारी आंकड़ों के अनुसार इस जनांदोलन में 940 लोग मारे गए, 1630 घायल हुए,18000 डी. आई. आर. में नजरबंद हुए तथा 60229 गिरफ्तार किए गए थे।

विदेशी-बहिष्कार और विदेशी माल का दाह, मद्य निषेध के लिए धरने का आयोजन, अछूतोद्धार, स्वदेशी प्रचार के लिए चर्खे और खादी को महत्व देना, सर्वधर्म-समन्वय और विशेषकर हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए प्रचार इनके द्वारा आरंभ किए गए अन्य प्रमुख सामाजिक सुधारात्मक कार्य माने गए हैं। इस प्रकार के स्वतंत्रता दिलाने वाले प्रयासों के लिए अक्सर बीच-बीच में इन्हें जेलयात्रा भी करनी पड़तीं।

सन् 1931 में इग्लैंड में संपन्न गोलमेज कान्फ्रेस में भाग लेने के लिए गांधी जी वहां गए, पर जब इनकी इच्छा के विरुद्ध हरिजनों को निर्वाचन का विशेषाधिकार हिन्दुओं से अलग करके दे दिया, तो भारत लौटकर गांधी जी ने पुनः आंदोलन आरंभ कर दिया। बंदी बनाए जाने पर जब ये अनशन करने लगे, तो सारा देश क्षुब्ध हो उठा। फलतः ब्रिटिश सरकार को गांधी जी के मतानुसार हरिजनों का पृथक निर्वाचनाधिकार का हठ छोड़ना पड़ा।

महात्मा गांधी का जन आंदोलन

1915: गांधी भारत में पहुंचे। उन्होंने तुरंत देखा कि कांग्रेस केवल संभ्रांत शहरी भारतीयों के एक क्लब था, जो छोटे शहरों और गांवों में आम आदमी के साथ नहीं जुड़ सका था.

उन्होंने पूरे देश का दौरा किया, और किसानों के कुछ स्थानीय मुद्दों में शामिल होना शुरू कर दिया। (चंपारण 1917, खेड़ा 1918)।

1921 में उन्हें कांग्रेस में कार्यकारी शक्तियां मिली । उन्होंने तुरंत सदस्यता को समावेशी बनाया, ताकि अधिकाधिक आम लोग सम्मिलित हो सकें, और असहयोग जन-आंदोलन शुरू कर दिया।

1922 में चौरी-चौरा हादसे के बाद यह बंद किया गया। उन्हें कई वर्षों के लिए जेल में डाल दिया गया था। बाहर आने पर, उन्होंने फिर से जन आंदोलन को जड़ से तैयार करने की कोशिश की. खादी आंदोलन शुरू करने और अस्पृश्यता से छुटकारा पाने, और सांप्रदायिक सद्भाव को बढ़ावा देने पर जोर दिया ।

1928 में, उन्होंने बारडोली सत्याग्रह में सरदार पटेल की मदद की

1930 में गांधी ने (दांडी मार्च सहित) सविनय अवज्ञा शुरू की, और कांग्रेस ने अध्यक्ष नेहरू के नेतृत्व में पूर्ण स्वतंत्रता की मांग की (26 जनवरी)। इससे पूरे देश में एक विशाल जन आंदोलन शुरू हुआ, और 100,000 गिरफ्तारी देने के लिए सामने आये

1942 में गांधी जी ने भारत छोड़ो आंदोलन शुरू किया।

तो हमको ये दिखाई देता है, कि मूलतः गांधीजी के प्रयासों से स्वतंत्रता एक जन आंदोलन बना था। उन्होंने छोटे शहरों और गांवों में आजादी की लड़ाई के प्रसार पर ध्यान केंद्रित किया, अन्यथा, स्वतंत्रता की बात सिर्फ एक संभ्रांत वर्ग के लिए बहस के मुद्दे से अधिक कुछ नहीं था।

याद रखिये कि गांधी जी यह सब हासिल करने में तब कामयाब रहे, जब इलेक्ट्रॉनिक मीडिया व्यावहारिक रूप से न के बराबर था , अधिकाँश भारतीय अनपढ़ थे, और ग्रामीण भारत में – जहां ज्यादातर आबादी रहती थी – संचार और परिवहन की मूलभूत सुविधाओं से भी बहुत थी । आखिर वह यह सब हासिल करने में सफल कैसे रहे? यह उनकी भागीदारी की तकनीक के माध्यम से सम्भव हो सका, उनकी अपील सभी को अपने अभियान के रूप में दिखती थी, ना कि गांधी के व्यक्तिगत अभियान की तरह।

अंग्रेजों भारत छोड़ो' और भारतवासियों को 'करो या मरो' की दी गई ललकार का जो भीषण परिणाम निकला, उसे निहार अंग्रेज न केवल घबरा गए, बल्कि बोरिया बिस्तर बांधकर इस देश से चले जाने के लिए बाध्य हो गए। फलतः 15 अगस्त 1947 के दिन भारत को स्वतंत्र कर अंग्रेज इंग्लैंड लौट गए।

निष्कर्ष

महात्मा गांधी के नाम से मशहूर मोहनदास करमचंद गांधी भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के एक प्रमुख राजनैतिक नेता थे। सत्याग्रह और अहिंसा के सिद्धान्तो पर चलकर उन्होंने भारत को आजादी दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके इन सिद्धांतों ने पूरी दुनिया में लोगों को नागरिक अधिकारों एवं स्वतन्त्रता आन्दोलन के लिये प्रेरित किया। उन्हें भारत का राष्ट्रपिता भी कहा जाता है। सुभाष चन्द्र बोस ने वर्ष 1944 में रंगून रेडियो से गांधी जी के नाम जारी प्रसारण में उन्हें 'राष्ट्रपिता' कहकर सम्बोधित किया था। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में निर्णायक भूमिका निभाने वाले भारत छोड़ो आंदोलन ने अंग्रेजी हुकूमत की नींव हिलाने का काम किया था।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. महात्मा गाँधी - "सत्य क़े साथ मेरे प्रयोग", " हिन्द स्वराज"
[2]. जे. बी. कृपलानी –" आधुनिक भारत क़े निर्माता गाँधी जीवन और दर्शन "
[3]. अनिल मिश्रा – "गाँधी एक अध्ययन"
[4]. bharatdiscovery.org/india/महात्मा_गाँधी